दशमः त्वम् असि
(दसवें तुम हो)

प्रस्तोता : रवि उपाध्यायः
-प्र.स्ना.शि. (संस्कृत/हिन्दी)
परमाणु ऊर्जा केन्द्रीय विद्यालय-१, तारापुर

पाठ-परिचय

- इस पाठ में संख्यावाची शब्दों से परिचय कराया गया है |
- पाठ में क्त्वा-प्रत्ययान्त पदों का प्रयोग भी है |
- इस भाग में हम पाठ के सरलार्थ को जानेंगे संख्यावाची पदों के लिए पाठ पृथक् रूप से उपलब्ध कराया जायेगा एवं “क्त्वा” प्रत्यय के विषय में ‘वक्तव्य-वृतांत’ (handout) भाग को देखें |

मूलपाठ एवं सरलार्थ

मूलपाठ

- एकदा दश बालकाः स्नानाय नदीम् अगच्छन् | ते नदीजले चिरं स्नानम् अकुर्वन् | ततः ते तीर्त्वा पारं गताः | तदा तेषां नायकः अपृच्छत् – अपि सर्वे बालकाः नदीम् उत्तीर्णाः?

सरलार्थ

- एक बार दस बालक स्नान के लिए नदी पर गए | उन्होंने देर तक नदी में स्नान किया | उसके बाद वे नदी तैरकर नदी के पर आ गये | तब उनके नायक ने पूछा – 'क्या सभी नदी से बाहर आ गए हैं ?

मूलपाठ एवं सरलार्थ

मूलपाठ

- तदा कश्चित् बालकः अगणयत् – एकः, द्वौ, त्रयः, चत्वारः, पञ्च, षट्, सप्त, अष्टौ, नव इति | सः स्वं न अगणयत् अतः सः अवदत् – नव एव सन्ति | दशमः न अस्ति | अपरः अपि बालकः पुनः अन्यान् बालकान् अगणयत् | तदा अपि नव एव आसन् | अतः ते निश्चयम् अकुर्वन् यत् दशमः नद्यां मग्नः | ते दुःखिताः तूष्णीम् अतिष्ठन् |

सरलार्थ

- तब किसी बालक ने गणना की– “एक, दो, तीन, चार, पाँच, छः, सात, आठ, नौ | उसने अपने आपको नहीं गिना | अतः वह बोला- “नौ ही हैं, दसवाँ नहीं है|” दूसरे बालक ने भी अन्य बालकों को गिना | फिर भी नौ ही थे | अतः उन्होंने निश्चय किया कि दसवाँ नदी में डूब गया है | वे दुःखी हो, चुपचाप बैठ गए |

मूलपाठ एवं सरलार्थ

मूलपाठ

- तदा कश्चित् पथिकः तत्र आगच्छत् | सः तान् बालकान् दुःखितान् दृष्ट्वा अपृच्छत्- बालकाः ! युष्माकं दुःखस्य कारणं किम्? बालकानां नायकः अकथयत्- वयं दश बालकाः स्नातुम् आगताः | इदानीं नव एव स्मः| एकः नद्यां मग्नः |

सरलार्थ

- तब कोई पथिक वहाँ आया | उसने बालकों को दुःखी देखकर पूछा- “हे बच्चों! तुम्हारे दुःख का कारण क्या है?” बालकों के नायक ने कहा- “हम दस लड़के स्नान के लिए आये थे | अब हम नौ ही हैं | एक नदी में डूब गया है |”

मूलपाठ एवं सरलार्थ

मूलपाठ

- पथिकः तान् अगणयत् | तत्र दश बालकाः एव आसन् | सः नायकम् आदिशत् त्वं बालकान् गणय | सः तु नव बालकान् एव अगणयत् | तदा पथिकः अवदत्- “दशमः त्वम् असि इति|”
- तत् श्रुत्वा प्रहृष्टाः भूत्वा सर्वे गृहम् अगच्छन् ||

सरलार्थ

- पथिक ने उन्हें गिना | वहाँ दस बालक ही थे | उसने नायक को आदेश दिया- “तुम बालकों को गिनो | उसने तो नौ बालक ही गिने |” तब पथिक बोला- “दसवें तुम हो |”
- यह सुनकर सभी प्रसन्न होकर घर चले गए |